और मैंने उस समय महसूस किया कि भारत को मजबूत और सुरक्षित करने का तरीका है कि शेष भारत संगठित किया जाये। सरदार पटेल ने कहा कि, 'हम इस समय ऐसी अवस्था में पहुँच गये थे कि यदि हम देश का बँटवारा न मानते तो सब-कुछ हमारे हाथ से चला जाता।

(5) जिन्ना की हठधर्मिता — जिन्ना की हठधर्मिता के कारण गोलमेज सम्मेलन और केबेल योजना असफल हो गई और सांप्रदायिक समस्या का कोई हल नहीं निकल सका। जिन्ना सदैव कांग्रेस को एक शुद्ध हिंदू संस्था सिद्ध करने का प्रयास करते रहे।

6. अंतरिम सरकार की असफलता — अंतरिम सरकार में लियाकत अली वित्त मंत्री ने, जो कांग्रेस मंत्रियों की योजना में सदैव बाधा उपस्थित करते रहे। वह कांग्रेस मंत्रियों को उनके विभागों में आवश्यक धन आवंटित न करके उन विभागों की कार्यविधियों को सही रूप से संचालित होना असंभव बना दिया। यह एक प्रकार से समूचे अंतरिम सरकार की असफलता का प्रतीक बना।

7. माउंटबेटन का प्रभाव — भारत में सांप्रदायिक दंगों के कारण स्थिति ~~अनियंत्रित~~ अनियंत्रित होती जा रही थी। इसलिए लार्ड माउंटबेटन ने अनुभव किया कि भारत को विभाजित करने के अतिरिक्त और कोई दूसरा विकल्प नहीं है। अंग्रेजों ने भारत छोड़ने की तिथि जून 1948 की अपेक्षा 15 अगस्त 1947 घोषित कर दी थी। अतः कांग्रेस के सामने केवल दो विकल्प थे:- हिंदुस्थान या पाकिस्तान।

Scanned with CamScanner

कांग्रेस के द्वारा लगातार उनकी मांगों को मानना, मुस्लिम लीग में अतिरिक्त महत्वकांक्षा को जन्म देने का कारण बनी, जिसका परिणाम था, अलग पाकिस्तान की मांग, मुस्लिम लीग के द्वारा।

(3) ब्रिटिश सरकार का रवैया → विभाजन का मुख्य कारण अंग्रेजों की नीति रही। अंग्रेजों ने प्रारंभ से ही भारत के हिंदु एवं मुसलमानों के बीच 'फूट डालो और राज करो' की नीति को अपनाया। उन्होंने भिन्न-भिन्न माध्यमों से हिंदुओं और मुसलमानों को एक-दूसरे के विरुद्ध भड़काया, चाहे वह बंगाल विभाजन हो या सांप्रदायिक चुनाव प्रणाली के माध्यम से। अपनी इस नीति के कारण अंग्रेज भारत में अपना राज्य स्थापित करने में सफल रहे।

(4) दंगे फसाद का होना → पाकिस्तान की मांग के कारण और मुस्लिम लीग की प्रत्यक्ष कार्यवाही के कारण सारा देश गृह-युद्ध की चपेट में आ गया। हत्या, चोरी, लूटमार एवं आगजनी की घटनाऐं दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी। इन्हें देखते हुये माउंटबेटन ने नेहरु जी और वल्लभ भाई पटेल पर मुस्लिम की पाकिस्तान की मांग को मानने का दबाव बनाया और उन्हें राजी कर लिया।

सरदार पटेल ने नवंबर, 1947 में नागपुर में भाषण देते हुये कहा था कि 'जब अंतरिम सरकार में आने के बाद मुझे यह पूर्ण अनुभव हो गया कि राजनैतिक विभाग के षडयंत्रों द्वारा भारत के हितों को बड़ी हानि पहुंच रही है तो मुझे यह विश्वास हो गया कि जितनी जल्द हम अंग्रेजों से छुटकारा पा लें उतना ही अच्छा है....

Scanned with CamScanner

भारत - विभाजन के लिए उत्तरदायी कारण

(B.A-SEMESTER VI) Paper XIII (13) Group C — 10

भारत का विभाजन माउंटबेटन योजना के आधार पर निर्मित भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 के आधार पर किया गया था। इस अधिनियम में कहा गया कि 15 अगस्त 1947 को भारत व पाकिस्तान अधिराज्य नामक दो स्वतंत्र उपनिवेश बना दिये जायेंगे और अंग्रेज ब्रिटिश सरकार सत्ता सौंप देगी। स्वतंत्रता के साथ ही 14 अगस्त को पाकिस्तान अधिराज्य और 15 अगस्त को भारतीय संघ (बाद में भारत गणराज्य) की स्थापना की गई। भारत के विभाजन से करोड़ों लोग प्रभावित हुये। विभाजन के दौरान हुई हिंसा में करीब 10 लाख लोग मारे गये और करीब 1.45 करोड़ शरणार्थियों ने अपना घर छोड़कर बहुमत संप्रदाय वाले देश में शरण ली।

भारत विभाजन के लिए उत्तरदायी कारण

(1) **मुस्लिम लीग का गलत दृष्टिकोण** → भारत के विभाजन में मुस्लिम लीग का स्वार्थी दृष्टिकोण सबसे महत्वपूर्ण रहा। प्रारंभ में तो मुस्लिम की स्थापना मुसलमानों के हितों को ध्यान में रखकर की गई थी। बाद में मुस्लिम लीग के माध्यम से जिन्ना ने दो राष्ट्र के सिद्धांत को जन्म दिया और मुसलमानों के बीच इसका जम कर प्रचार-प्रसार कर पाकिस्तान की स्थापना पर जोर दिया।

(2) **कांग्रेस की कमजोर नीति** - प्रारंभ में मुस्लिम लीग के प्रति कांग्रेस की कमजोर नीति ने मुस्लिम लीग को बढ़ावा देने का काम किया।

Scanned with CamScanner